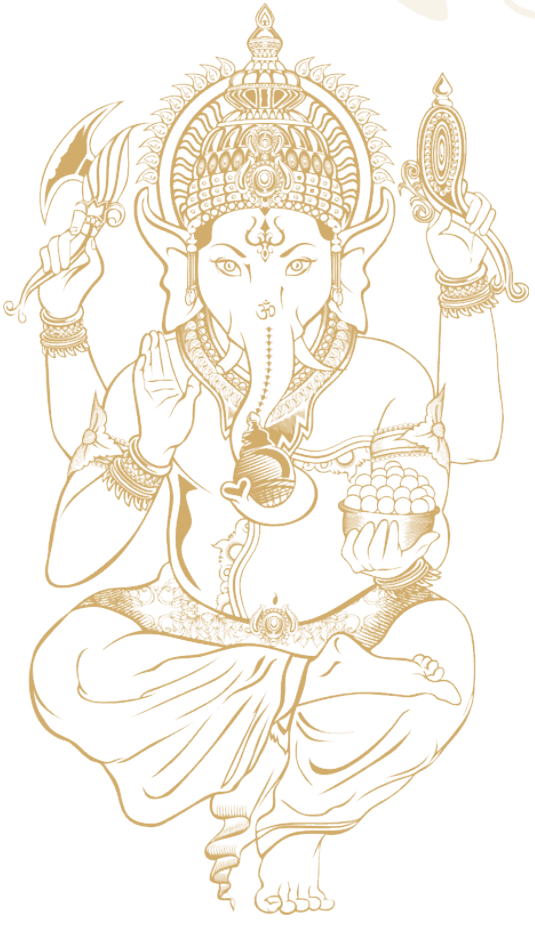

Aayush Paliwal

02 Jul 1996

08:58 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120991901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**02/07/1996**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**08:58:00 घंटे**
इष्ट	08:46:41 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	08:36:52 घंटे
वेलान्तर	-00:04:02 घंटे
साम्पातिक काल	03:18:41 घंटे
सूर्योदय	05:27:19 घंटे
सूर्यास्त	19:22:53 घंटे
दिनमान	13:55:34 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	16:43:18 मिथुन
लग्न के अंश	00:58:13 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**मकर - शनि**
नक्षत्र-चरण	**उत्तराषाढ़ा - 2**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	वैधृति
करण	तैतिल
गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	भो-भोजराज
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	आषाढ़	11
पंजाबी	संवत : 2053	आषाढ़	19
बंगाली	सन् : 1403	आषाढ़	18
तमिल	संवत : 2053	आनी	18
केरल	कोल्लम : 1171	मिथुनम	18
नेपाली	संवत : 2053	आषाढ़	19
चैत्रादि	संवत : 2053	आषाढ़	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2053	आषाढ़	कृष्ण 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 1
तिथि समाप्ति काल _____: 05:36:45
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: उत्तराषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 23:35:46 घंटे
जन्म योग _____: उत्तराषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग _____: ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____: 07:49:06 घंटे
जन्म योग _____: वैधृति
सूर्योदय कालीन करण _____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 05:36:45 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 15:56:29
भभोग _____: 52:30:55
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 4 वर्ष 2 मा 3 दि

घात चक्र

मास _____: वैशाख
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: मंगलवार
नक्षत्र _____: रोहिणी
योग _____: वैधृति
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: कुम्भ
सूर्य _____: कुम्भ
चन्द्र _____: सिंह
मंगल _____: मीन
बुध _____: धनु
गुरु _____: मेष
शुक्र _____: वृष
शनि _____: मकर
राहु _____: मिथुन

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

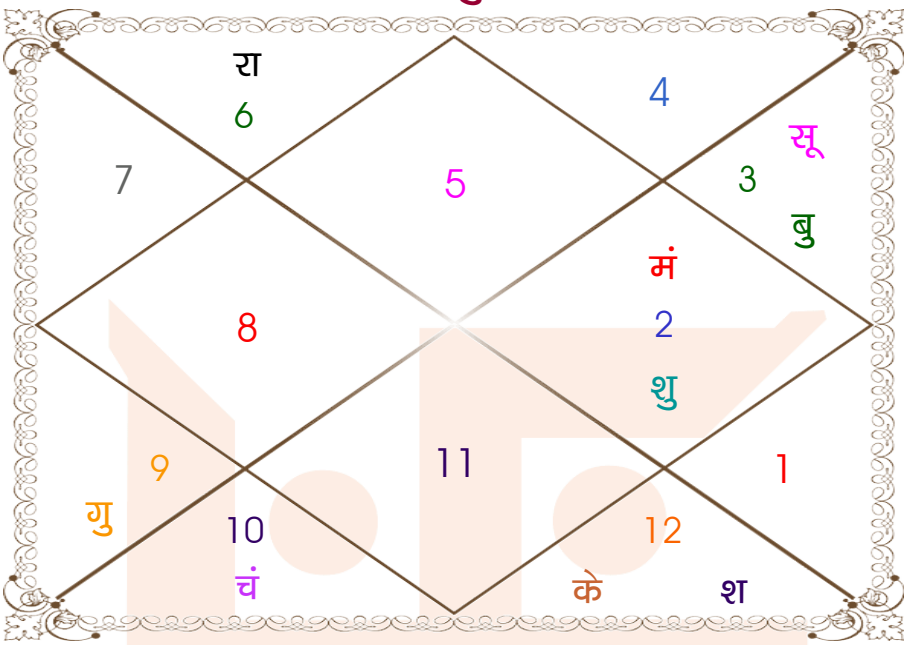

चन्द्र कुंडली

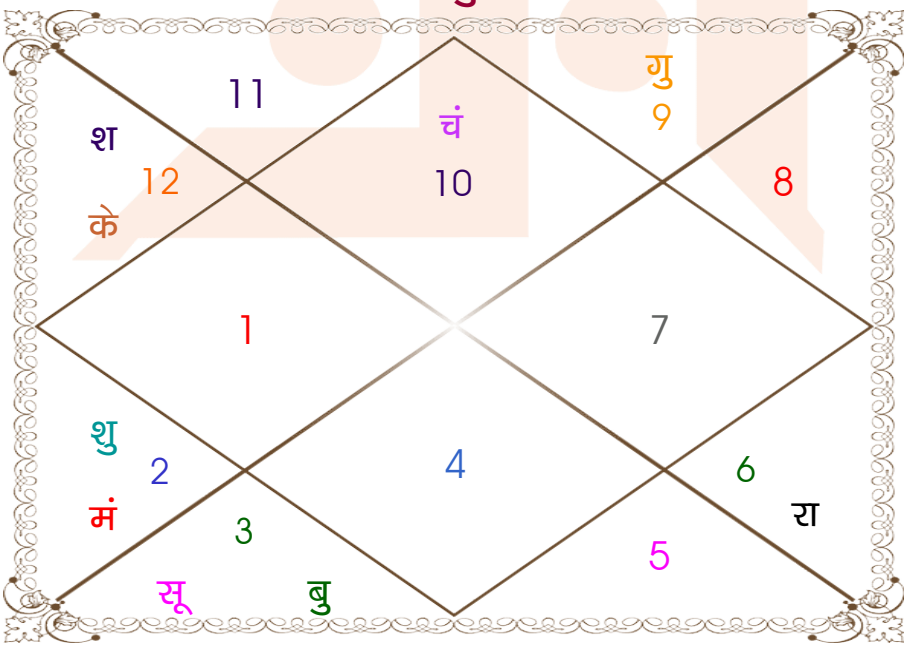

Meenna Salaria Astro &Numerio
Delhi
9667113751
salaria.meena@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

लग्न कुंडली

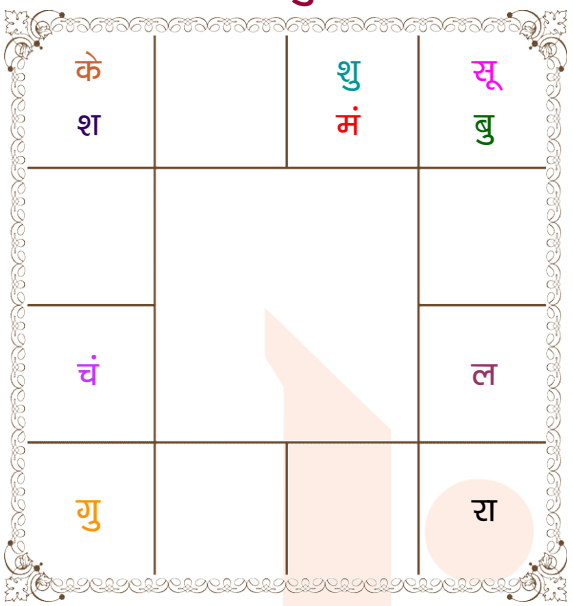

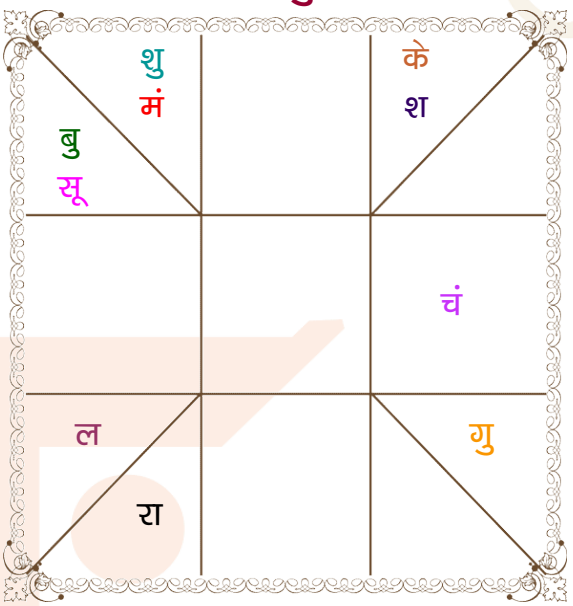

विंशोत्तरी
सूर्य 4वर्ष 2मा 3दि
सूर्य

02/07/1996	
06/09/2114	
सूर्य	04/09/2000
चन्द्र	05/09/2010
मंगल	04/09/2017
राहु	05/09/2035
गुरु	05/09/2051
शनि	05/09/2070
बुध	05/09/2087
केतु	05/09/2094
शुक्र	06/09/2114

योगिनी
संकटा 5वर्ष 6मा 24दि
सिद्धा

26/01/2023	
25/01/2030	
सिद्धा	06/06/2024
संकटा	26/12/2025
मंगला	07/03/2026
पिंगला	27/07/2026
धान्या	25/02/2027
भ्रामरी	06/12/2027
भद्रिका	25/11/2028
उल्का	25/01/2030

Meenna Salaria Astro &Numerio
Delhi
9667113751
salaria.meena@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	00:58:13	310:32:56	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	---
सूर्य			मिथु	16:43:18	00:57:11	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	शुक्र	सम राशि
चंद्र			मक	00:43:14	15:15:08	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	सम राशि
मंगल			वृष	19:59:16	00:41:49	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	केतु	सम राशि
बुध		अ	मिथु	05:50:13	02:02:35	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	स्वराशि
गुरु	व		धनु	19:15:17	00:07:41	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	स्वराशि
शुक्र	व		वृष	17:58:00	00:00:20	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	स्वराशि
शनि			मीन	13:21:15	00:01:41	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	सम राशि
राहु	व		कन्या	18:56:42	00:10:07	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	18:56:42	00:10:07	रेवती	1	27	गुरु	बुध	केतु	मूलत्रिकोण
हर्ष	व		मक	09:41:21	00:02:08	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
नेप	व		मक	02:59:49	00:01:32	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	---
प्लूटो	व		वृश्चि	06:55:40	00:01:10	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	---
दशम भाव			मेष	28:16:33	--	कृतिका	--	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:34

लग्न-चलित

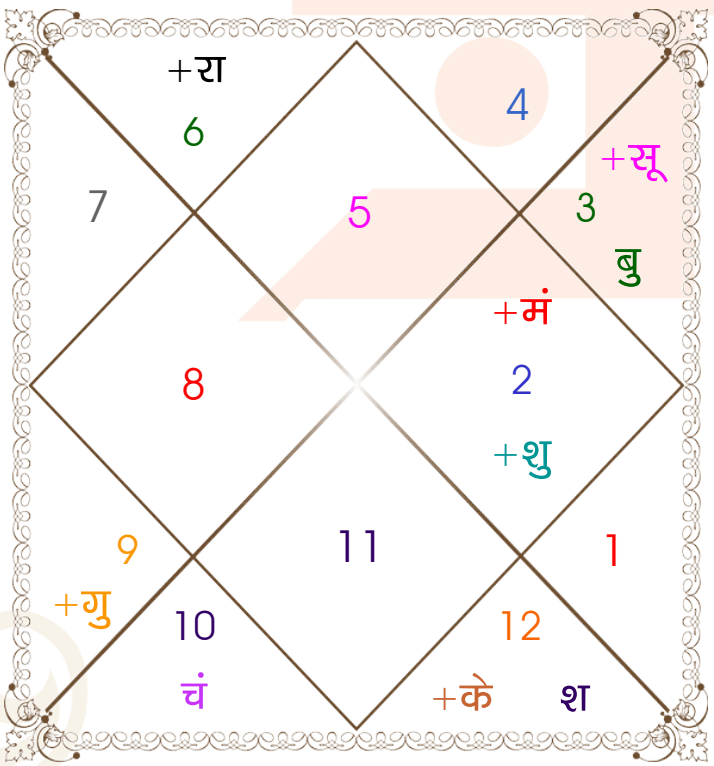

चन्द्र कुंडली

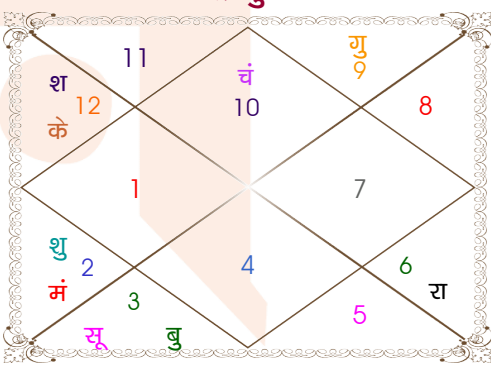

नवमांश कुंडली

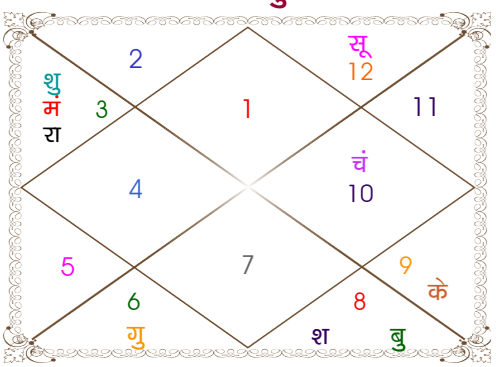

Meenna Salaria Astro &Numerio
Delhi
9667113751
salaria.meena@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	15:31:17	सिंह	00:58:13
2	सिंह	15:31:17	कन्या	00:04:20
3	कन्या	14:37:23	कन्या	29:10:27
4	तुला	13:43:30	तुला	28:16:33
5	वृश्चिक	13:43:30	वृश्चिक	29:10:27
6	धनु	14:37:23	मकर	00:04:20
7	मकर	15:31:17	कुम्भ	00:58:13
8	कुम्भ	15:31:17	मीन	00:04:20
9	मीन	14:37:23	मीन	29:10:27
10	मेष	13:43:30	मेष	28:16:33
11	वृष	13:43:30	वृष	29:10:27
12	मिथुन	14:37:23	कर्क	00:04:20

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	00:58:13
2	सिंह	26:28:37
3	कन्या	25:57:42
4	तुला	28:16:33
5	धनु	00:52:44
6	मकर	01:56:49
7	कुम्भ	00:58:13
8	कुम्भ	26:28:37
9	मीन	25:57:42
10	मेष	28:16:33
11	मिथुन	00:52:44
12	कर्क	01:56:49

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

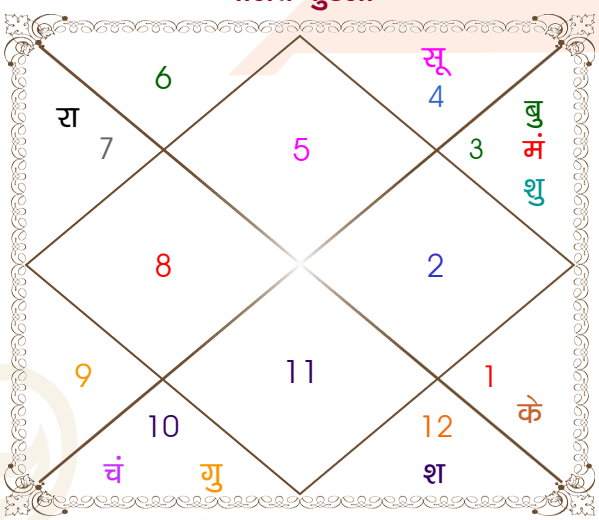

भाव कुंडली

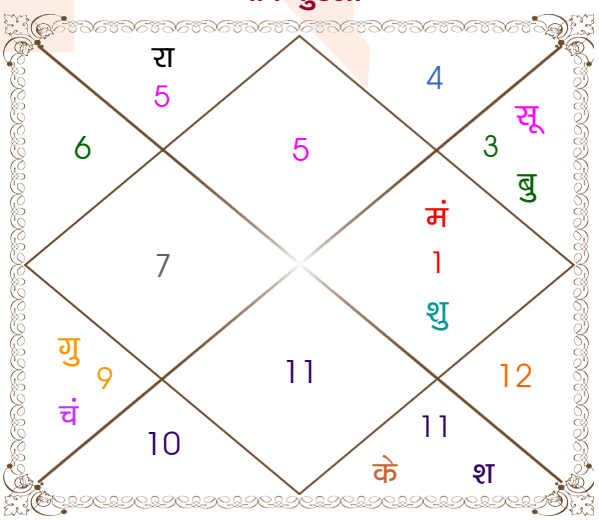

Meenna Salaria Astro &Numerio
Delhi
9667113751
salaria.meena@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 2 मास 3 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
02/07/1996		04/09/2000		05/09/2010		04/09/2017		05/09/2035	
04/09/2000		05/09/2010		04/09/2017		05/09/2035		05/09/2051	
	00/00/0000	चंद्र	05/07/2001	मंगल	01/02/2011	राहु	17/05/2020	गुरु	23/10/2037
	00/00/0000	मंगल	04/02/2002	राहु	19/02/2012	गुरु	11/10/2022	शनि	05/05/2040
	02/07/1996	राहु	05/08/2003	गुरु	25/01/2013	शनि	17/08/2025	बुध	11/08/2042
राहु	22/09/1996	गुरु	04/12/2004	शनि	06/03/2014	बुध	05/03/2028	केतु	18/07/2043
गुरु	12/07/1997	शनि	06/07/2006	बुध	03/03/2015	केतु	24/03/2029	शुक्र	18/03/2046
शनि	24/06/1998	बुध	05/12/2007	केतु	30/07/2015	शुक्र	24/03/2032	सूर्य	04/01/2047
बुध	30/04/1999	केतु	05/07/2008	शुक्र	28/09/2016	सूर्य	15/02/2033	चंद्र	05/05/2048
केतु	05/09/1999	शुक्र	06/03/2010	सूर्य	03/02/2017	चंद्र	17/08/2034	मंगल	11/04/2049
शुक्र	04/09/2000	सूर्य	05/09/2010	चंद्र	04/09/2017	मंगल	05/09/2035	राहु	05/09/2051

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
05/09/2051		05/09/2070		05/09/2087		05/09/2094		06/09/2114	
05/09/2070		05/09/2087		05/09/2094		06/09/2114		00/00/0000	
शनि	08/09/2054	बुध	31/01/2073	केतु	01/02/2088	शुक्र	04/01/2098	सूर्य	24/12/2114
बुध	18/05/2057	केतु	28/01/2074	शुक्र	02/04/2089	सूर्य	04/01/2099	चंद्र	25/06/2115
केतु	27/06/2058	शुक्र	28/11/2076	सूर्य	08/08/2089	चंद्र	05/09/2100	मंगल	31/10/2115
शुक्र	26/08/2061	सूर्य	05/10/2077	चंद्र	09/03/2090	मंगल	05/11/2101	राहु	03/07/2116
सूर्य	08/08/2062	चंद्र	06/03/2079	मंगल	05/08/2090	राहु	05/11/2104		00/00/0000
चंद्र	08/03/2064	मंगल	02/03/2080	राहु	24/08/2091	गुरु	07/07/2107		00/00/0000
मंगल	17/04/2065	राहु	20/09/2082	गुरु	30/07/2092	शनि	06/09/2110		00/00/0000
राहु	22/02/2068	गुरु	26/12/2084	शनि	07/09/2093	बुध	06/07/2113		00/00/0000
गुरु	05/09/2070	शनि	05/09/2087	बुध	05/09/2094	केतु	06/09/2114		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 4 वर्ष 2 मा 4 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
17/08/2025		05/03/2028		24/03/2029		24/03/2032		15/02/2033	
05/03/2028		24/03/2029		24/03/2032		15/02/2033		17/08/2034	
बुध	27/12/2025	केतु	28/03/2028	शुक्र	23/09/2029	सूर्य	09/04/2032	चंद्र	02/04/2033
केतु	19/02/2026	शुक्र	31/05/2028	सूर्य	16/11/2029	चंद्र	07/05/2032	मंगल	04/05/2033
शुक्र	25/07/2026	सूर्य	19/06/2028	चंद्र	16/02/2030	मंगल	26/05/2032	राहु	25/07/2033
सूर्य	09/09/2026	चंद्र	21/07/2028	मंगल	21/04/2030	राहु	14/07/2032	गुरु	06/10/2033
चंद्र	26/11/2026	मंगल	12/08/2028	राहु	02/10/2030	गुरु	27/08/2032	शनि	01/01/2034
मंगल	19/01/2027	राहु	09/10/2028	गुरु	25/02/2031	शनि	18/10/2032	बुध	20/03/2034
राहु	08/06/2027	गुरु	29/11/2028	शनि	18/08/2031	बुध	03/12/2032	केतु	21/04/2034
गुरु	10/10/2027	शनि	29/01/2029	बुध	20/01/2032	केतु	23/12/2032	शुक्र	21/07/2034
शनि	05/03/2028	बुध	24/03/2029	केतु	24/03/2032	शुक्र	15/02/2033	सूर्य	17/08/2034

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
17/08/2034		05/09/2035		23/10/2037		05/05/2040		11/08/2042	
05/09/2035		23/10/2037		05/05/2040		11/08/2042		18/07/2043	
मंगल	09/09/2034	गुरु	18/12/2035	शनि	19/03/2038	बुध	31/08/2040	केतु	31/08/2042
राहु	05/11/2034	शनि	19/04/2036	बुध	28/07/2038	केतु	18/10/2040	शुक्र	27/10/2042
गुरु	26/12/2034	बुध	07/08/2036	केतु	20/09/2038	शुक्र	05/03/2041	सूर्य	13/11/2042
शनि	25/02/2035	केतु	22/09/2036	शुक्र	21/02/2039	सूर्य	15/04/2041	चंद्र	11/12/2042
बुध	20/04/2035	शुक्र	30/01/2037	सूर्य	08/04/2039	चंद्र	23/06/2041	मंगल	31/12/2042
केतु	13/05/2035	सूर्य	10/03/2037	चंद्र	24/06/2039	मंगल	11/08/2041	राहु	20/02/2043
शुक्र	16/07/2035	चंद्र	14/05/2037	मंगल	17/08/2039	राहु	13/12/2041	गुरु	07/04/2043
सूर्य	04/08/2035	मंगल	28/06/2037	राहु	03/01/2040	गुरु	02/04/2042	शनि	31/05/2043
चंद्र	05/09/2035	राहु	23/10/2037	गुरु	05/05/2040	शनि	11/08/2042	बुध	18/07/2043

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
18/07/2043		18/03/2046		04/01/2047		05/05/2048		11/04/2049	
18/03/2046		04/01/2047		05/05/2048		11/04/2049		05/09/2051	
शुक्र	27/12/2043	सूर्य	02/04/2046	चंद्र	14/02/2047	मंगल	25/05/2048	राहु	21/08/2049
सूर्य	14/02/2044	चंद्र	26/04/2046	मंगल	14/03/2047	राहु	15/07/2048	गुरु	16/12/2049
चंद्र	05/05/2044	मंगल	13/05/2046	राहु	26/05/2047	गुरु	30/08/2048	शनि	03/05/2050
मंगल	01/07/2044	राहु	26/06/2046	गुरु	30/07/2047	शनि	23/10/2048	बुध	05/09/2050
राहु	24/11/2044	गुरु	04/08/2046	शनि	15/10/2047	बुध	10/12/2048	केतु	26/10/2050
गुरु	03/04/2045	शनि	19/09/2046	बुध	23/12/2047	केतु	30/12/2048	शुक्र	21/03/2051
शनि	04/09/2045	बुध	31/10/2046	केतु	21/01/2048	शुक्र	25/02/2049	सूर्य	04/05/2051
बुध	20/01/2046	केतु	17/11/2046	शुक्र	11/04/2048	सूर्य	14/03/2049	चंद्र	16/07/2051
केतु	18/03/2046	शुक्र	04/01/2047	सूर्य	05/05/2048	चंद्र	11/04/2049	मंगल	05/09/2051

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	88%	धनार्जन, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	88%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, सुख
पुखराज	गुरु	78%	सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
हीरा	शुक्र	76%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पन्ना	बुध	75%	धनार्जन, धन
गोमेद	राहु	67%	धन, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	50%	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	0%	शत्रु व रोग, व्यय
नीलम	शनि	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

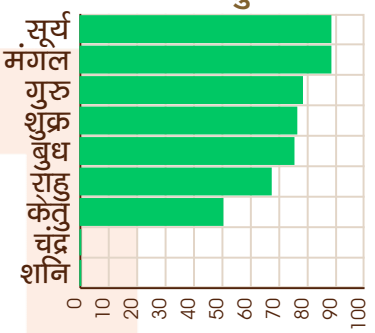

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	04/09/2000	100%	12%	94%	75%	84%	64%	0%	55%	26%
चंद्र	05/09/2010	94%	25%	88%	81%	78%	76%	0%	55%	26%
मंगल	04/09/2017	94%	12%	100%	62%	84%	76%	0%	55%	57%
राहु	05/09/2035	75%	0%	75%	75%	78%	82%	0%	80%	26%
गुरु	05/09/2051	94%	12%	94%	62%	90%	64%	0%	67%	50%
शनि	05/09/2070	75%	0%	75%	81%	78%	82%	0%	74%	26%
बुध	05/09/2087	94%	0%	88%	87%	78%	82%	0%	67%	50%
केतु	05/09/2094	75%	0%	94%	75%	78%	82%	0%	55%	63%
शुक्र	06/09/2114	75%	0%	88%	81%	78%	89%	0%	74%	57%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझें जाएंगे । आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में

धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(04/09/2017 - 05/09/2035)

राहु की महादशा 04/09/2017 को आरम्भ और 05/09/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु द्वितीय भाव में बुध की राशि में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपकी यात्रा तथा व्यय और साझेदारों से लाभ होगा। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ, उत्तम शिक्षा और सरकार से संभावित आर्थिक लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली और ऊर्जावान् होंगे। किन्तु मौसम में परिवर्तन के कारण गले का रोग, वाइरल बुखार, स्नायविक-दुर्बलता, चर्मरोग आदि मामूली रोग हो सकते हैं। कुछ सतर्कता बरत कर इनमें से कुछ से बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति और उपहार में धन की प्राप्ति होगी। सट्टे तथा निवेश में लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए वायुयान-संचालन, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, ट्रैवेल एजेण्ट, वायुसैनिक, लेखा-कार्य, कम्प्यूटर- विज्ञान, प्रकाशन आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, आयात-निर्यात, कागज, टेलीफोन, इलेक्ट्रॉनिक सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता, पदोन्नति, उच्च सम्मान और आय में वृद्धि होगी। आपको सहकर्मियों का सहयोग और उच्चाधिकारियों की शुभकामना प्राप्त होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उपार्जन तथा लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार और सम्पत्ति की अचानक बाढ़ आएगी। आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है और अप्रत्याशित प्रगति की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा जायदाद :

इस दशा के दौरान आपका जीवन सुखमय रहेगा। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद के लिये भी यह दशा उत्तम है। जमीन-जायदाद में वृद्धि की संभावना है। आपका एक आरामदायक मकान होगा। चन्द्र की महादशा में आपकी छोटी यात्रा और मंगल की महादशा में लम्बी यात्रा होगी। मामूली नुकसान से बचाव के लिये सावधानी बरतें।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य, लेखन, समाचार माध्यम आदि में आपकी रुचि होगी। आप तेज हैं तथा बौद्धिक गतिविधि से सम्बन्धित सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आप यदा-कदा परिवार से दूर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचानक धन मिलेगा, हालाँकि कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या और परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता को समृद्धि और सम्पत्ति मिलेगी तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे जबकि आपके पिता को आदर, सम्पत्ति तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, व्यय होगा और विरोधियों तथा प्रतिद्वन्द्वियों के कारण निराशा मिलेगी। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल सम्पत्ति, आवास में परिवर्तन तथा जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति तथा जीवन का सुख मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपको सम्पत्ति और सुख की प्राप्ति होगी। गुरु की अंतरदशा में लाभ होगा और मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, सफलता, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति और यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में शिक्षा, परिवार में सुख और लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी जबकि उसके बाद शुरू होने वाली सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान जमीन जायदाद में वृद्धि और माता से सुख मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी और भाई-बहनों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, कुछ स्वास्थ्य समस्या और यात्रा होगी।

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(17/08/2025 - 05/03/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/09/2017 को प्रारंभ होकर 05/09/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 17/08/2025 को प्रारंभ होकर 05/03/2028 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा पूर्ण होगी। आप विभिन्न विषयों के विद्वान होंगे। कोई नयी खोज कर सकते हैं। धनागम उत्तम होगा, कर्मचारी वफ़ादार रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(05/03/2028 - 24/03/2029)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/09/2017 को प्रारंभ होकर 05/09/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 05/03/2028 को प्रारंभ होकर 24/03/2029 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इनकी स्वयं की कोई राशि नहीं होती। सामान्यतः इन्हें अशुभ समझा जाता है परंतु वास्तव में ये शुभ या अशुभ, कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार होते हैं।

इस अवधि में आपको अपनी गलतियों के कारण कोई व्याधि हो सकती है। आपकी जर, जोरु, जमीन में रुचि अधिक रहेगी। आप इनके पीछे भागेंगे, जिस कारण उत्सर्जन तंत्र का कोई रोग हो सकता है। प्रत्येक कदम उठाने से पहले सावधान रहना आवश्यक है ताकि किसी बात की अति न हो।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – शुक्र
(24/03/2029 - 24/03/2032)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/09/2017 को प्रारंभ होकर 05/09/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 24/03/2029 को प्रारंभ होकर 24/03/2032 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंधित गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। सौंदर्य प्रसाधन, फैशन आदि से संबधित व्यापार में लाभ हो सकता है। समाज में सफल रहेंगे, प्रसिद्ध बनेंगे। मन में कुछ नये, विचित्र विचार आ सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं